Date - 22-04-2020

Dr. Sanchlata
Asst. Professor (Guest faculty)
Dept. of Philosophy
Women's college, Samastipur
Email Id. Sachababli1987@gmail.com
Cont. no. - 8409587640

Class - B.A. - Part (I) Hons
Topic - Spingza Concept of Substance.

Scanned with CamScanner

स्पीनोजा का दर्शन (Philosophy of Spinoza)

पाश्चात्य दर्शन के इतिहास में Baruch Spinoza का नाम अत्यन्त ही आदर से लिया जाता है। जीवन के प्रारम्भिक काल में स्पीनोजा ने धर्म और दर्शन का अध्ययन किया था। उनके दर्शन का लक्ष्य लोगों को यह बताना था कि किस प्रकार व्यक्ति विश्व को अपना घर समझ सकता है एवं प्रकृति के विभिन्न जीवों के साथ सम्बन्ध बना सकता है। उनकी यह धारणा थी कि जो व्यक्ति सही अर्थों में ईश्वर से वास्तव प्रेम करता है वह कभी भी इस बात की इच्छा नहीं करता कि ईश्वर भी बदले में उससे प्रेम करे।

सामान्य रूप से स्पीनोजा को एक दुर्बोध दार्शनिक की संज्ञा दी जाती है पर इसका कारण यह नहीं कि दार्शनिक समस्याओं पर उनके द्वारा दिया गया विचार अपने आप में अस्पष्ट या अव्यक्त है बल्कि इसका मुख्य कारण यह है कि उन्होंने जिन दार्शनिक निष्कर्षों की स्थापना की है वे अत्यन्त ही कठोर, शुष्क, अरुचिपूर्ण एवं सामान्य रूप से आम अग्राह्य प्रतीत होते हैं।

Scanned with CamScanner

स्पीनोजा, देकार्त की भांति ही एक कट्टर बुद्धिवादी विचारक है। अतः जिस प्रकार देकार्त ने बुद्धि को एक मात्र दार्शनिक खोज का आधार और साधन माना था ठीक उसी प्रकार स्पीनोजा के अनुसार के अनुसार भी केवल बुद्धि ही दार्शनिक समस्याओं के समाधान का एक मात्र साधन है। स्पीनोजा यह मानते हैं कि केवल विवेक ही वह साधन है जिससे ठोस, निश्चित, और सार्वभौम ज्ञान की प्राप्ति सम्भव है।

Scanned with CamScanner

द्रव्य विचार (Concept of Substance)

बुद्धिवादी दार्शनिक स्पिनोजा विश्व की सम्यक् रूप से व्याख्या करने के लिए अपने दर्शन का आरंभ द्रव्य की विवेचना से करते हैं। द्रव्य को परिभाषित करते हुए वे अपने ग्रंथ 'एथिक्स' में कहते हैं कि 'द्रव्य वह है जो अपने आप में है और अपने द्वारा समझा भी जाता है। अर्थात् जिसके ज्ञान के लिए अन्य ज्ञान की आवश्यकता नहीं है।'
द्रव्य की इस परिभाषा से निम्न लक्षण उभर कर सामने आते हैं—

(i) द्रव्य का कोई कारण नहीं है, वह अपना कारण स्वयं है लैटिन भाषा में इसे 'Causa Sui' और हिन्दी में 'स्वयंभू' कहते हैं।

(ii) द्रव्य स्वतंत्र है, वह अपनी सत्ता और ज्ञान के लिए किसी पर आश्रित नहीं है।

(iii) द्रव्य निरपेक्ष है, वह अपनी सत्ता और ज्ञान के लिए किसी की अपेक्षा नहीं करता।

(iv) द्रव्य एक और अद्वितीय है। उल्लेखनीय है कि देकार्त ने द्रव्यों में द्वैत माना था। स्पिनोजा के अनुसार यदि एक से अधिक द्रव्य की सत्ता को

Scanned with CamScanner

को स्वीकार किया गया तो फिर वे एक दूसरे की सत्ता को सीमित कर देंगे और उनमें पारस्परिक निर्भरता का भाव आ जाएगा। अतः द्रव्य

अतः द्रव्य को स्वतंत्र होने के लिए उसका एक और अद्वितीय होना आवश्यक है (यहाँ एक का तात्पर्य संख्यात्मक एक से न होकर एकत्व (Unity) से है।

(v) द्रव्यपूर्ण है पूर्ण होने के कारण वह नित्य शाश्वत एवं अनंत है।

(vi) द्रव्य निर्गुण है यहाँ निर्गुण का आशय द्रव्य रहितता या गुणों के अभाव से नहीं है।

(vii) द्रव्य में असीमित एवं असंख्य गुण पाए जाते हैं। प्रत्येक गुण उसके असीमता एवं पराकाष्ठा को इंगित करते हैं। मानो ऐसे किसी गुण को भावना नहीं कर सकता। मानों केवल सीमित गुणों की ही भावना कर सकता है, जो अनेक वस्तुओं पर लागू होती है। द्रव्य में ऐसे सीमित गुणों का अभाव है (इसी संदर्भ में यहाँ द्रव्य को निर्गुण कहा गया है।

निर्गुण होने के कारण द्रव्य अवर्णनीय है। स्पिनोजा के अनुसार प्रत्येक गुण निषेधात्मक होता है।

Scanned with CamScanner

यदि द्रव्य पर ऐसे किसी सीमित गुण का आरोपण किया गया तो फिर वह द्रव्य को अनेक गुणों से रहित कर देगा। उदाहरणस्वरूप यदि यह कहा जाय कि वस्तु लाल है, तो इसका तात्पर्य यह भी होगा कि वस्तु हरी, पीली आदि नहीं है। इस प्रकार वर्णन के क्रम में गुणों के आरोपण का आशय होगा। अनेक गुणों से वंचित कर देना। यही कारण है कि स्पिनोजा द्रव्य पर किसी गुण के आरोपण की बात स्वीकार नहीं करते। इस संबंध में उनकी प्रसिद्ध उक्ति है -

"Every determination is negation"

(viii) ~~निर्गुण होने के कारण~~

समीक्षा — स्पीनोजा का द्रव्य विचार उनकी ज्यामितिक विधि का एक आवश्यक परिणाम है और जैसा कि हम लोगों ने देखा है ज्यामितिक विधि कई दृष्टि से असंगत एवं त्रुटिपूर्ण है और इसी कारण स्पीनोजा के द्रव्य विचार में भी कई असंगतियां निहित है।

Scanned with CamScanner